माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: हायर सेकेण्डरी परीक्षा

केन्द्र क्रमांक की सील: 771001

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 0 0 1 परीक्षा का विषय हिन्दी
2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12/3/09
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C,या D) अनिवार्यतः भरें — कोड 2001 सेट B

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर [redacted]

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक K 1479702

4. परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	7	7	1	5	4	1	1

5. नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :–

दो	नौ	सात	सात	एक	पाँच	चार	एक	एक

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :–

क :– संख्या शब्दों में X अंकों में X

ख :– परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक [illegible] में है।

ग :– उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न–पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

B हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

S नाम S. Bawaja

E पता / संस्था School [illegible] Shala

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

M

P हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक	प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक	प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक
1								
2								
3								
4								
5								
6								
7								
8								
9								
10								
कुल प्राप्तांक								

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या मूल्यांकन के समय सही पाई गई है। होलोक्राफ्ट स्टीकर चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। मैंने सभी प्रश्नों के उत्तरों का गहन मूल्यांकन किया है। उत्तर पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक) | हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) | हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 9350158 | दिनांक.................... | दिनांक....................

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक / विषय / माध्यम / दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा / रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

उत्तर - 1

(i) मीराबाई कृष्ण भक्ति शाखा
(ii) गणेश जी
(iii) कबीर
(iv) श्री कृष्ण
(v) सूरदास

उत्तर - 2

(i) भय में
(ii) बसंती और बहू को
(iii) बिजनौर से
(iv) पेशेवर अध्यक्ष
(v) बचपन के अनुभव

उत्तर 3

(i) असत्य
(ii) असत्य
(iii) असत्य
(iv) असत्य
(v) सत्य

B S E M P

पृष्ठ 2 अंकों का योग

उत्तर-4

(i) केशवदास
(ii) पश्चिमी देश
(iii) विष्णु कान्त शास्त्री
(iv) वीर
(v) सूखी डाली

उत्तर-5

(i) डॉ श्यामसुन्दर दुबे
(ii) ब्रज भाषा
(iii) रेल की पटरियों की खटखटाहट
(iv) गाँधी जी ने
(v) ग्वाले ने

उत्तर-6

कबीर ने कहा है कि संसार में शब्द की बड़ी महीमा है। शब्द के हाथ और पाँव दोनो नहीं होते। हमारी जीभ से निकला शब्द कभी वापस नहीं आता। हमारे मुख से से निकला एक शब्द किसी के लिये औषाधी का कार्य करता है तो किसी के लिये घाव का। अतः हमें शब्द सोच विचार कर

14

पृष्ठ के अंकों का योग

5

B S E M P

निकालना चाहिये।

उत्तर- 7

जगति के इस मधुवन में फूल और मालिन मधु-वर्षण करके मुरझा जायेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन एक ना एक दिन समाप्त हो ही जाता है। फिर चाहे वह फूल हो या मालिन (जीवन) इन दोनों की प्रकृति एक समान होती है। ~~प्रयोग की~~

उत्तर - 8

रहस्यवाद का अर्थ होता है "छिपा हुआ" इस संसार का सबसे बड़ा रहस्य वह परमात्मा है।

"चिन्तन के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है वही काव्य के क्षेत्र में रहस्यवाद है"

रहस्यवादी कविता की विशेषताएं निम्न लिखित है।

1. प्रेम की अभिव्यंजना
2. आध्यात्मिक तत्वों की प्रधानता
3. परोक्ष सत्ता के प्रति आरक्षण
4. ईश्वर एक है कि मान्यता (अद्वैत का अर्थ अद्वितीय ईश्वर)
5. रहस्यवादी कवियों की अभिव्यंजना

B S E M P

3

4

7

पृष्ठ के अंकों का योग

यां

उत्तर - 9

हिन्दी में उपन्यास सम्राट "प्रेमचन्द" को कहा जाता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास के शुक्ल युग में प्रेमचन्द्र ने उपन्यास और नाटक दोनो की जो रचना कि है। वह सराहनीय है।

प्रेमचन्द्र के दो उपन्यास निम्न लिखित है

1. गोदान
2. गबन
3. सेवासदन

उत्तर - 10

ताप पिघलना का अर्थ होता है - विरह-जन्य दुःख कम होना / विरह का ताप कभी कम नहीं होता। बिरहणी हिमालय की ठण्डी छाँह में रहे या राजस्थान या मरुस्थल की तपती रेत में, विरह का दुःख तो बढ़ता ही चला जाता है। कभी 2 ऐसा प्रतीत होता है कि ताप कम हो गया है पर वास्तव में होता नहीं है। लक्ष्मण के जाने पर विरहनी उर्मिला को भी ऐसा ही प्रतीत होता है अतः हिमालय की ठण्डी छाँह में भी यशोधरा का ताप नहीं पिघलता है।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर - 11

सूर्य सदैव पूर्व से उगता है और पश्चिम में अस्त होता है। अर्थात् सूर्य की तेजवान रौशनी का अंत पश्चिम की ओर होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि आज हमारे देश के नौजवान अपने देश की सभ्यता संस्कृति को भूलकर पश्चिमी सभ्यता को अपना रहे हैं। जिससे हमारे देश की पूर्व की सभ्यता का ह्रास हो रहा है। अर्थात् हमारे देश के नौजवान पूर्व की सौगन्ध जन्य वायु छोड़कर पश्चिम की प्रदूषित वायु की ओर बढ़ रहे हैं जो पूर्णतः अंधकार का प्रतीक है इसे ही कवि ने "आयातित अंधकार" कहा है।

उत्तर - 12

शांत का स्थायी भाव होता है "निर्वेद" अर्थात् जब निर्वेद नामक स्थायी भाव विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव से संयुक्त होता है तब शान्त रस की निष्पत्ति होती है।

उदाहरण :-

"मन रे! परस हरि के चरण
सुभग शीतल कमल कोमल
त्रिविध ज्वाला हरण ॥"

ISEMP

पृष्ठ - अंकों का योग

8 योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 8 के अंक = कुल अंक

उत्तर - 14

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

आचार्य राम चन्द्र शुक्ल का जन्म 11 अक्टूबर 1884 में हुआ था। इनके पिता का नाम चन्द्र बलि शुक्ल थे। इन्होंने अपनी शिक्षा बी. ए. तक ही की और जीविका उपार्जन हेतु मिर्जापुर विश्वविद्यालय में ड्राइंग के शिक्षण का कार्य करने लगे। इनकी मृत्यु 1940 में हुई थी।

रचनाएँ → अगोना में जन्मे इस लेखक ने अनेक रचनाएँ कि है।
चिन्तामणी, त्रिवेणी, विचार वीथी इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

भाषाशैली → डॉ रामचन्द्र शुक्ल की भाषा अत्यंत प्रौढ़ प्रांजल व परिष्कृत है।
भाषा में गंभीरता है। इनके लेखक की गंभीरता अद्वितीय है। भाषा में शब्दाडम्बर व्यर्थ ही नहीं आये हैं बल्कि भाव व अर्थ के अनुरूप प्रयोग किये हैं। भाषा में सौष्ठव है। इनके लेखन के पद अत्यंत लम्बे 2 हैं। कहीं 2 भाषा में दुरुहता भी आ गई है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

मध्यप्रदेश

शैली > रामचन्द्र जी अपनी शैली के स्वयं निर्माता हैं। इन्होंने अपनी शैली में प्रबंध व मुक्तक शैली को चुना है।

समीक्षात्मक शैली > इस शैली का प्रयोग शुक्ल जी ने समीक्षात्मक तथा समालोचनात्मक निबंधों में किया है। इस शैली के वाक्य लम्बे हैं।

गवेषणात्मक शैली > इस शैली का प्रयोग शुक्ल जी अनुसन्धान सम्बंधी निबंधों में की है। इस शैली से निबंधों में कहीं वाक्य छोटे हो गये हैं तो कहीं लम्बे हैं।

भावात्मक शैली > इस शैली का प्रयोग भी इन्होंने अपने निबन्ध संग्रह में किया है। इस शैली से लेखन में जो भावात्मक रंगों की छटा बिखेरते हैं वह भी उल्लेखनीय है।

हास्य व्यंग शैली > इस शैली का प्रयोग डॉ.रामचन्द्र शुक्ल ने हास्य व्यंग निबन्धों को लिखने के लिये किया है।

साहित्य में स्थान > डॉ.रामचन्द्र शुक्ल ने जो गंभीरता पूर्ण रचनाएँ की हैं। वह अद्वितीय है। इन्हीं के आगमन से हिन्दी में आलोचना प्रारंभ हुई थी। साहित्य के क्षेत्र में इनका स्थान अद्वितीय है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर- 15

"सूरदास"

सूरदास के जन्म के सम्बन्ध में विद्वानों का एक मत नहीं है। कुछ विद्वान सूरदास का जन्म दिल्ली के सिरोही नामक ग्राम में सन् 1478 में बताते हैं। सूरदास जन्मान्ध थे। एक किवदन्ती के अनुसार सूरदास जन्मान्ध नहीं थे बल्कि इन्हे किसी कन्या से प्रेम हो गया था। जिसके न मिलने पर इन्होने अपनी आँखे फोड़ दी। इनकी मृत्यु 1583 में हुई थी।

रचनाएँ → सूरदास की निम्न तीन रचनाएँ प्रमुख हैं।

सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी।

सूरसागर → सूरसागर इनकी अमर कृति है इसमें 6 या सात हजार दोहे हैं।

भावपक्ष → सूरदास के काव्य में अनेक गुण देखने को मिलते हैं।

1. अद्वितीय वात्सल्य → सूरदास को वात्सल्य का सम्राट कहा जाता है। यह वात्सल्य के चितेरे हैं। इन्होने अपनी रचनाओं में जो कृष्ण का बाल

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

य

रूपी बखान कोया है। श्री कृष्ण की क्रिडाएं, कौतहूल माता- पिता से शादी की जिद करना तथा चाँद को देखकर उसे माँगना आदि। इन के इस वात्सल्य की छटा देखकर अन्य कवि इनके जन्मान्ध होने का सन्देह करते हैं। इनके वात्सल्य की कुछ झलक निम्न है।

"मैया कबही बढेगी यह चोटी
कितनी बार मोहि दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी"

शृंगार परक → सूरदास के काव्य में शृंगार रस का प्रयोग भी सराहनीय है। कृष्ण और राधा के प्रेम को इन्होंने अनूठा स्थान दे दिया है।

भक्तिवाद → सूरदास श्री कृष्ण के अनन्य भक्त थे इन्होंने अपने प्रत्येक काव्य में श्री कृष्ण का अत्यंत मनोहारी चित्रण किया है।

कलापक्ष → सूरदास का कलापक्ष भी अत्यंत सुन्दर है जो निम्न प्रकार से है।

भाषा → सूरदास ने ब्रज भाषा का ही प्रयोग किया है। इन्होंने अपनी भाषा को लोगों के समझने योग्य बनाया है। इनकी रचित रचनाओं में भाषा की महीमा उसे पढ़ने मात्र से समझ आती है।

शैली → सूरदास ने अपनी रचनायें गेय पद शैली में लिखी हैं।

BSEMP

अलंकार → सूरदास ने अपनी कविता में अलंकारों का प्रयोग नहीं किया है यह तो स्वयं ही इनके रचनाओं में आ गये हैं। इनकी रचनाओं में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकार दिखाई देते हैं।

साहित्य में स्थान → सूरदास का साहित्य मे स्थान अद्वितीय है वात्सल्य रस के सम्राट कहे जाने वाले इस कवि ने तो भक्तिकाल को सुन्दरता प्रदान कर दी चिरस्मरणीय स्थान रखने वाले इसे कवि के बारे में जितना भी कहा जाये उतना कम है। इनका स्थान मैं इस एक वाक्य द्वारा बताना चाहूँगी।

"सूर-सूर तुलसी ससि उडगन केशवदास"

उत्तर- 16

दुख - - - - - - - तक रहता है।

सन्दर्भ → प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक स्वाति के "भय" नामक निबन्ध से लिया गया है। जिसके लेखक "आचार्य रामचन्द्र शुक्ल" हैं।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रसंग → प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने भय के लघुरूप आशंका को बताया है। तथा इन दोनो में भेद का स्मरण कराया है।

व्याख्या → लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते है कि जब किसी व्यक्ति में आपत्ति के आने का आवेगपूर्ण मनोविकार होता है तब वह भय कहलाता है किन्तु जब किसी व्यक्ति के मन में भ्रम से किसी मुसीबत के आने की सम्भावना मात्र से जो आवेगशून्य मनोविकार उत्पन्न होता है उसे "आशंका" कहते है। जब इन्सान आशंका से ग्रस्त होता है तो उसे उस आशंका का कोई प्रभाव पड़ता दिखाई नहीं देता वह अपने कार्यों को जारी रखते हुए आगे बढ़ता है। आशंका में व्यक्ति को इससे बाहर जाने की जल्दी नहीं होती है क्योंकि यह केवल सम्भावना होती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल दोनों में भेद बताते हुए कहते हैं। कि आशंका का संचार कुछ धीमा होता है जबकि भय का संचार तीव्र होता है। किन्तु आशंका लम्बे समय तक बनी रहती है।

विशेष → 1. अशंका की प्रकृति की विवेचना है।
2. भय और आशंका में अन्तर व्यक्त किया गया है।
3. अशंका के प्रभावों का वर्णन किया गया है।

B
S
E
M
P

मध्यप्रदेश

उत्तर- 1 + (ब)

टूक-टूक _ _ _ _ _ _ _ बसावौ ना।

सन्दर्भ → प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक स्वाति के "उद्धव-प्रसंग" से लिया गया है जिसके कवि "जगन्नाथ "रत्नाकर" " हैं।

प्रसंग → प्रस्तुत पद्यांश में विरह अन्य गोपियाँ अपने मन के विरह का बखान करते हुए उद्धव से योग की बातों के कठोर पत्थर न मारने को कहती हैं।

व्याख्या → प्रस्तुत पद्यांश में जब उद्धव गोपियों से योग की कठोर बातें कहता है तब गोपियाँ श्री उद्धव से कहती हैं कि हमारा मन पहले से ही बहुत दुखी है। अब आप इसे अपने कठोर पत्थर चलाकर और मत दुखाइये और टुकड़े-टुकड़े मत किजिये। एक कृष्ण ने तो मन में बसकर हमारा सब-कुछ ले लिया। अब आप इस मन में अनेक कृष्ण मत बसाइये। इन अनेक कृष्ण के बस जाने से हम विरह रूपी दुख को सहन नहीं कर पायेंगें।

विशेष → 1. गोपियों के मन की दशा को बताया गया है
2. उद्धव से योग की बाते ना कहने की प्रार्थना की गई है।

उत्तर- 18

(i) उपयुक्त गद्यांश का शीर्षक " मन की महिमा "

(ii) जब मनुष्य धर्म का पालन करता है तब उसकी सबसे बडी बाधा उसका अपना मन होता है। मनुष्य के कर्तव्य पूर्ति में भी उसका मन बाधा बनता है। यदि उसका मन पक्का होता है तो वह अपने कार्य को करने में सक्षम हो जाता है और यदि उसका मन उसे आज्ञा ना देवे तो वह केवल अपने स्वार्थ पूर्ति में ही ध्यान देता है।

(iii) धर्म पालन के मार्ग में सबसे बडी बाधा चित्त की चंचलता, उद्देश्य की अस्थिरता और मन की निर्बलता से पड़ती है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

B S E M P

सेवा में,

जिला कलेक्टर,

सिवनी (म.प्र.)

विषय → ध्वनि विस्तारक यंत्रों के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु

महोदय जी,

सनम्र निवेदन है कि माध्यमिक शिक्षा मण्डल की परीक्षा परीक्षा का समय नजदीक आ रहा है। हम सभी छात्र-छात्राएं अपने अध्ययन में व्यस्त हैं। किन्तु अनेक धार्मिक पर्व व विवाह आदि के कारण कुछ लोग ध्वनि विस्तारक यन्त्रों का प्रयोग देर रात तक कर रहे हैं जिससे हमारे अध्ययन में व्यवधान उत्पन्न हो रहा है इससे पहले इसी सम्बन्ध में महर्षि विद्यालय के छात्रों ने भी आपको पत्र लिखा था।

आशा है आप हमारे भविष्य को ध्यान में रखते हुए ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर प्रतिबन्ध लगाने की आज्ञा देंगे।

धन्यवाद

दिनांक

12/3/09

प्रार्थी

छात्र-छात्राएं

मिशन ह. सा. से. स्कूल सिवनी

पृष्ठ योग

उत्तर- 15 (ब)

(अ) नि.लि. वाक्यों को निर्देशानुसार लिखो

(i) जब सूर्योदय होता है तब पक्षी चहकते हैं।

(ii) वह गरीब है किन्तु ईमानदार है।

(ब) आज देश में भ्रष्टाचार, बेईमानी, जमाखोरी बहुत बढ़ गई है। ईमानदारी की झलक देखने को भी नहीं मिलती है। किन्तु जो सुख ईमानदारी की सूखी रोटी में मिलता है वह बेईमानी के कबाब में भी नहीं मिलता है। जो व्यक्ति स्वावलम्बी होते हैं उन्हे ना तो सोना-चान्दी, चाहिये रहता है और ना ही धन दौलत फिर भी स्वावलम्बी व्यक्तियों को यह सबकुछ अपने आप ही मिल जाता है। इसलिये कहा गया है कि "स्वावलम्बन की एक झलक पर कुर्बान कुबेर का कोष"

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

18

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 18 के अंक	=	कुल अंक

B S E M P

उत्तर- २०

प्रदूषण : कारण और निदान

रूपरेखा → 1. प्रस्तावना।
2. प्रदूषण का अर्थ
3. प्रदूषण के प्रकार
4. प्रदूषण के कारण
5. निदान
6. उपसंहार

"साँस लेना भी मुश्किल हो गया
वातावरण इतना प्रदूषित हो गया"

प्रस्तावना → प्रदूषण एक ऐसी समस्या है जो केवल भारत की ही नहीं बल्कि विश्व की समस्या बनती जा रही है। प्रदूषण से वातावरण इतना प्रदूषित होता जा रहा है कि कोई वस्तु उपभोग हेतु नहीं रही।

प्रदूषण का अर्थ → जब प्राकृतिक वस्तुओं में अवांछनिय हानिकारक पदार्थ मिल जाते है तो यही प्रदूषण कहलाता है।

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रदूषण के प्रकार → प्रदूषण के कई प्रकार होते हैं। जल प्रदूषण, वायु प्रदूषित, रेडियो धर्मी प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, रसायनिक प्रदूषण इत्यादि

जल प्रदूषण → "जल ही जीवन है" जब इस जीवन रूपी जल में अवांछनीय तत्व मिल जाते हैं जैसे कूड़ा, कारखानों का जल, मल-मूत्र आदि तब इसे जल प्रदूषण कहते हैं। इस प्रदूषण से जल किसी उपयोग का नहीं रहता।

वायु प्रदूषण → जिस स्वस्थ में वायु में हम साँस ले रहे हैं यदि इसमें हानिकारक गैसों का मिलाप हो जाता है तब इसे ही वायु प्रदूषण कहते हैं। वायु प्रदूषण अत्यंत घातक सिद्ध हो सकता है। क्योंकि हमारे जीवन के लिये आक्सीजन की आवश्यक्ता होती है।

मृदा प्रदूषण → जब इस मृदा में अवांछनीय तत्व तथा गंदे रसायनिक पदार्थ मिल जाते हैं तब ही यह मृदा प्रदूषण कहलाता है। इस प्रदूषण से मृदा की उर्वरक शक्ति कम हो जाती है।

ध्वनि प्रदूषण → अवांछित आवाज या शोर को ध्वनि प्रदूषण कहा जाता है यह भी मानव के लिये घातक सिद्ध हो सकता है इससे मानव के सुनने की क्षमता क्षीण हो जाती है।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

5. प्रदूषण के कारण → इस प्रदूषण के अनेक कारण होते हैं।

1. जल प्रदूषण → 1. कारखानों का गंदा पानी नदियों तालाबों में बहाया जाता है।

2. बस्तियों में रहने वाले लोग नदियों के समक्ष ही मलमूत्र आदि क्रियाएँ कर रहे हैं।

3. जल में मृत शव बहा दिया जाता है।

2. वायु प्रदूषण → 1. कारखानों से निकलने वाली गैसें वायुमण्डल में छोड़ी जा रही हैं।

2. वाहनों के सर्वाधिक प्रयोग से निकलने वाली गैस वातावरण को प्रदूषित कर रही है।

3. जलाऊ ईंधन के प्रयोग से भी वायु प्रदूषित हो रही है।

3. मृदा प्रदूषण → मृदा में रसायनिक पदार्थ मिलाये जा रहे हैं।

2. मृदा में दवाइयों का प्रयोग भी मृदा प्रदूषण का कारण है।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

B S E M P

प्रदूषण के परिणाम → प्रदूषण के परिणाम मानव पशु पक्षी व सभी जीव जन्तुओं के लिये घातक सिद्ध हो रहे है।
1. मानव के प्रयोग हेतु जल का अभाव
2. पीने हेतु जल का अभाव
3. साँस लेने में शुद्ध वायु की कमी
4. मृदा प्रदूषण से अन्न उपज में कठिनाई हो रही है।
5. ध्वनि प्रदूषण से मानव के सुनने की क्षमता कम हो जाती है।
6.

प्रदूषण के निदान → प्रदूषण के कारण व परिणाम दोनों बहुत है इसके लिये निम्न कदम उठाये जा सकते है।
1. वृक्षा रोपण
2. कारखानों का जल नदियों की बजाय कहीं और छोड़ा जाये।
3. कारखानों की वायु वायुमण्डल मे ना छोड़ी जाये।
4. मृदा में रसायनिक पदार्थ की जगह खाद्य पदार्थ का उपयोग किया जाये।
5. ध्वनि विस्तारक यन्त्रों का भी कम प्रयोग किया जाये।
6. नदियों में कपड़े धोना, नहाना, तथा पशुओं को भी नहीं नहलाना चाहिये।

पृष्ठ के अंको का योग [ ]

उपसंहार :- प्रदूषण को कम करना आज हमारे लिये बहुत आवश्यक हो गया गया है। इसके लिये हमें भी अपना समर्थन देना चाहिये। अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर देश की प्रगति में अपना योगदान देना चाहिये।

"स्वच्छ वातावरण स्वच्छ जीवन"

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

24

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग